अमर नईम

कृपया बच्चों को दवा ज़रूर पिलवाएं

अंजुम नईम

यह मेरे जीवन का अजीब सुखद संयोग है कि 1955 के जिस महीने में डॉक्टर जोनास सालिक ने पोलियो का पहला टीका तैयार किया उसी महीने में मेरा जन्म हुआ हालांकि सफलता की मंज़िल अभी दूर थी। ठीक तीन साल बाद मेरे पिता के होंठों की मुस्कराहट एक दिन अचानक दम तोड़ गई। मेरी मां बताती हैं कि बुखार का चौथा दिन था और मैं अचानक चलते-चलते गिरने लगा। दाहिने पांव में जैसे खून की रफ़्तार सुस्त पड़ गई थी। पहले सोचा गया कि शायद चोट लगी हो या मोच आ गई हो, इसलिए हर प्रकार की मालिश और टोटके किए गए लेकिन कुछ ही दिनों बाद दाहिना पांव काफी पतला होकर झूल गया। मस्जिद के इमाम साहिब, जो हर शाम मग़रिब की नमाज़ के बाद फूंकने आया करते थे, ने पूरे विश्वास के साथ घोषणा कर दी कि यह तो 'काली हवा' की मार है जिसका इलाज सिर्फ बुजुर्गों की दुआओं में है। मेरी मां मरियम बेगम की कमज़ोर पड़ती मजबूत बांहों में मेरा लकवा मारा हुआ अस्तित्व लटक रहा था और उनकी आंखों से गिरते हुए आंसू चांद-तारे लगे हुए मेरे गोटेदार कपड़े को भिगो रहे थे। उनकी बेचारगी को मैं सिर्फ अपनी आंखों से देख सकता था, उसकी गहराई का अंदाज़ा मेरे बस की बात नहीं थी।

अम्मां कहती हैं कि वह कौन सी दरगाह थी जिसकी चौखट पर उन्होंने माथा नहीं टेका, वह कौन से बुज़ुर्ग थे जिनकी दुआओं की पोटली का तावीज़ (गंडा) तेरे बाजू पर नहीं बांधा और उसके बाद वह कौन सी जुमे की रात थी जब मस्जिद की ताक़ में आशा का दीप नहीं जलाया, लेकिन वह 'काली हवा' जैसे हर लौ बुझाने का फैसला कर चुकी थी। तीन-चार साल की हर कोशिश के बावजूद मेरे माता-पिता की हर लाचारी को जैसे ठहराव मिल गया हो। मेरी मां को मेरे पिता मरहूम नईमुद्दीन साहब ने धैर्य रखने का हौसला दिया, ''जैसा है, हमारे घर का चिराग है। इसी से दरवाज़े पर रोशनी रहेगी।'' उनके इस धैर्य या सब्र में कितनी मायूसी थी, उसका मैं उस वक़्त तक अंदाज़ा लगाने योग्य बन चुका था।

1962 के प्रारंभ में कोलकाता में मेरे पिता को पता चला कि मेरी दुकान के पास ही किसी मिशनरी का कोई हेल्थ क्लिनिक है, जहां ऐसे अपाहिज बच्चों के लकवा मारे हुए हाथ-पांव का व्यायाम के जरिए इलाज किया जाता है। उन्होंने मुझे फौरन गांव से बुलवाकर वहां इलाज शुरू किया और महीनों सुबह-शाम पांव की वर्ज़िश का सिलसिला जारी रहा। अचानक भारत-चीन युद्ध छिड़ गया और कोलकाता में भगदड़ मची तो हम लोग इलाज छोड़कर गांव चले आए। लेकिन इस दौरान इतना फायदा हो चुका था कि मैं किसी के सहारे के बिना चलने लगा था और व्यायाम कराने वाली दयालु नन सिस्टर थॉमस के अनुसार इससे अधिक बेहतरी संभव नहीं थी। वर्ज़िश के दौरान सिस्टर थॉमस मेरे पिता को विश्वास दिला चुकी थीं कि यह किसी 'काली हवा' की मार नहीं है, बल्कि यह एक बीमारी है जिसका नाम पोलियो है और इसका टीका भी विश्व बाज़ार में आ गया है।

> ''जैसा है, हमारे घर का चिराग है। इसी से दरवाज़े पर रोशनी रहेगी।''

मरियम बेगम और उनके पुत्र अंजुम नईम बिहार में अपने पारिवारिक आवास में।

मेरे पिता के निधन से कई वर्ष पहले भारत में पोलियो से बचाव के लिए ओरल वैक्सीन (ओपीवी) के टीकाकरण का अभियान शुरू हो चुका था। उन्होंने अपनी ज़िंदगी के आखिरी बरसों में यह नियम बना लिया था कि जब आस-पड़ोस के किसी घर में बच्चे की पैदाइश की खबर मिलती तो वे फौरन वहां पहुंचते और शिशु को फ़ौरन पोलियो का टीका लगवाने का शिद्दत के साथ मशविरा दिया करते, जैसे यह उनकी ज़िंदगी का एक मिशन हो गया था। मैंने भी अपने पिता की इस परंपरा को यथासंभव जारी रखने की कोशिश की है।

—अप्रकाशित आत्मकथा 'एक आम आदमी की कहानी' से।

इस लेख के बारे में अपने विचार editorspan@state.gov पर भेजिए।